भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी समाचार पत्रों का योगदान

डॉ0 अजय कुमार

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स आर्ट्स एण्ड साइंस, पटना

सार

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी समाचार पत्रों की भूमिका को समझने के लिए सबसे पहले अंग्रेजों के आगमन, भारत में उनके शासन स्थापना के बाद की नीतियों, भारतीयों पर पड़े इसके दुष्परिणाम को समझना होगा। इस काल में अंग्रेज भारत को आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक सभी स्तरों पर पराधीन करने के लिए तत्पर थे। अनेक प्रकार के कर जनता पर लगाए जा रहे थे। स्वदेशी वस्तुओं को नष्ट किया जा रहा था। इसके स्थान पर विदेशी वस्तुओं का आयात कर अधिक कीमत पर जनता को दिया जा रहा था। शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार किया जा रहा था। समाज में स्त्री शिक्षा का अभाव था। बाल-विवाह अपनी चरम सीमा पर था। बाल-विवाह के कारण विधवाओं की समस्याएँ तेजी से बढ़ रही थीं। कचहरियों में हिन्दी के स्थान पर उर्दू और फारसी का बोलबाल था। साधारण जनता इन दोनों भाषाओं को भली-भांति नहीं समझती थी। जनता अपना सरकारी काम देवनागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा में करना चाहती थी। परन्तु, उन्हें यह छूट नहीं थी। देश को भारतीयता के एकसूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तानी के नारे लगाए जा रहे थे। समकालीन विषम परिस्थितियों में हिन्दी समाचार पत्रों ने विदेशी सत्ता से मुक्ति के लिए सभी स्तरों पर जनचेतना जगाने के लिए अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। हिन्दी पढ़ने वालों के सामने पाठ्य-पुस्तकों और विशेषकर हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों का अभाव था। कचहरी में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को स्थापित करने की माँग और हिन्दी को बढ़ावा देने में सरकारी सहयोग की अपेक्षा की जा रही थी। दूसरी ओर सरकार जनता की राष्ट्रीय भावना दबाने और प्रेसों की स्वतंत्रता प्रतिबंधित करने के पक्ष में थी। इसलिए 1878 ई0 में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट' लागू किया गया। लॉर्ड लिटन ने जनता के विचारों की स्वतंत्रता को सीमित करने कि लिए अखबारों, मुद्रण-यंत्रों पर रोक लगाई।

शब्द कुँजी: देवनागरी लिपि, जन चेतना, स्वदेशी चेतना, वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, स्वराज

देश को भारतीयता को एकसूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तानी के नारे लगाए जा रहे थे। समकालीन विषम परिस्थितियों में हिन्दी समाचार पत्रों ने विदेशी सत्ता से मुक्ति के लिए सभी स्तरों पर जनचेतना जगाने के लिए अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। नि:संदेह 1857 ई0 की क्रांति भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए राह दिखाती है। परंतु अंग्रेजों से लड़ने के लिए भारतीयों को आंतरिक और बाह्य दोनो स्तर पर परिवर्तन और एकजुटता की आवश्यकता थी। ऐसी विषम परिस्थितियों में वैचारिक चेतना जगाना समाचार पत्रों का मुख्य लक्ष्य था। आधुनिक शिक्षा,पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से जन-जन में नयी चेतना जगाना पत्रों का मुख्य कार्य बन गया। इस युग की सभी पत्र-पत्रिकाओं ने संघर्ष के लिए नयी चेतना जगाने का कार्य किया। अत: इस युग की पत्रकारिता का मुख्यधारा नवजागरण ही कही जाएगी। 1867-1900 के मध्य मुख्य-चेतना नवजागरण को ही आगे बढ़ाने का कार्य पत्रों ने किया। यही नवचेतना जगाना समकालीन अखबारों का लक्ष्य था। पूरे युग में नवचेतना जगाने का नेतृत्व भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने किया। इस युग में जितनी भी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई उनका स्वरूप साहित्यिक तो था पर वह केवल साहित्यिक विचारों तक ही सीमित नहीं थी। वे साहित्य के माध्यम से समकालीन यथार्थ को व्यक्त करती थी। पत्रों की मुख्य चेतना राष्ट्रीय भावना जगाना, समाज-सुधार, हिन्दी भाषा और साहित्य को नया स्वरूप देना, देश को पराधीनता से मुक्त कराना, स्वदेशी चेतना जगाना लक्ष्य था। युग की स्थितियों की अभिव्यक्ति युगीन पत्रों में हुई। उस काल के पत्र अपनी युगीन चेतना की अभिव्यक्ति है। वस्तुत: देश के निर्माण में उस युग के पत्रों की मुख्य भूमिका थी। उन पत्रों ने हिन्दी भाषा और साहित्य को नया स्वरूप प्रदान किया। नाटक,

निबंध, उपन्यास, कविताएँ, यात्रा-वर्णन, आदि सभी विधाओं को परिपुष्ट किया। साथ ही नाटक तथा काव्यों के माध्यम से जन-मन में राष्ट्रीय चेतना जगायी।

भारतेन्दु इस युग के ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, अपनी भाषा का सम्मान, पराधीनता से मुक्ति के लिए संघर्ष करने का संदेश दिया। समाचार पत्रों के इतिहास के इस नवजागरण काल में हिन्दी समाचार पत्रों को अपना-स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त हुआ। पत्रों के संचालक या संपादक सभी साहित्यकार थे जिनका उद्देश्य साहित्य-सेवा तो था, साथ-साथ देश की समस्याओं के प्रति लोगो को जागृत करना भी था। इस युग की प्रमुख पत्रिका थी:-

1. कविवचन सुधा, 1867 ई0, भारतेन्दु हरिश्चंद्र
2. हरिश्चंद्र मैगजीन, 1873 ई0 भारतेन्दु हरिश्चंद
3. बालाबोधनी, 1874 ई0 भारतेन्दु हरिश्चंद
4. हिन्दी प्रदीप, 1877 ई0, पं0 बालकृष्ण भट्ट
5. भारत मित्र, 1878 ई0, बाल मुकुन्द गुप्त
6. ब्राह्मण, 1883 ई0, प्रताप नारायण मिश्र

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु हरिचंद्र जी का प्रवेश गद्य के विकास हेतु एक क्रांतिकारी घटना है। उन्होंने अपनी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ-साथ ब्रिटिश दमनकारी नीतियों का विरोध भी किया और सामाजिक कुप्रथाओं के खिलफ बढ़-चढ़ कर लिखा। '' भारतेन्दु ने अकाल, महामारी टैक्स, किसानों की निर्धनता, स्वदेशी आदि पर सीधे, सरल ढंग से निबंध और कविताएँ लिखीं।''[1] उन्होंने कविवचान-सुधा (1867 ई0), हरिश्चंद्र मैगजीन (हरिश्चंद्र चंद्रिका, 1873 ई0) बालाबोधनी (1874 ई0) जैसे पत्रों का संपादन और प्रकाशन किया। हरिश्चंद्र मैगजीन में राष्ट्रीयता के साथ समाज सुधार की खबरें बेखौफ छपती थीं। वहीं, बालाबोधनी का प्रकाशन स्त्री-शिक्षा से जुड़ा हुआ था। इसमें जो लेख प्रकाशित होते थे सभी स्त्रीशिक्षा पूर्ण, सुगृहणी बनाने वाले थे। प्रकाशित लेखों के विषय होते थे- शीलवती, सुलोचना की कथा, सती-चरित्र, सीता-अनुसूया मिलन, कुलवधुओं की चेतावनी, पतिव्रत,शिशु पालन प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त नारी समाजोपयोगी नाटक, कविता और नीति विषयक कविताएँ होती थी।

पं0 बाल कृष्ण भट्ट

मानवीय जीवन में पत्रकारिता का बड़ा महत्व है। जब पत्रकारिता का जुड़ाव राष्ट्र स्वतंत्रता के संदर्भ में राष्ट्रभक्ति से हो तो इसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है। हिन्दी भाषा के पत्रकार भारतीय स्वतंत्रता सग्राम में अपने अभूतपूर्व त्याग और बलिदान के लिए जाने जाते हैं। इन पत्रकारों में पं0 बाल कृष्ण भट्ट का नाम अग्रणी है। भट्ट जी ने अपनी मनोभावनाओं को जनता तक पहुँचाने तथा समाज में नई जागृति सृजन करने के लिए 1 सितंबर, 1877 को अपनी मासिक हिन्दी पत्रिका 'हिन्दी-प्रदीप' को विक्टोरिया प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित किया।

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाचार-पत्रों ने समाज में फैली कुप्रथाओं के विरूद्ध सर्वप्रथम अभियान आरंभ किया। उन दिनों समाज में छोटी कन्याओं की हत्या, बाल-विवाह, विधवा, विधवा-समस्या, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, अंधविश्वास एवं जाति-प्रथा सरीखी कुप्रथाओं ने समाज को अपने शिकंजे में जकड़ा हुआ था। इनके विरूद्ध भट्टजी ने 'हिन्दी प्रदीप' के माध्यम से जन-साधारण में चेतना लाने का वातावरण तैयार किया। बाल-विवाह के संबंध में भट्टजी ने लिखा-'' विवाह आयु को कानून द्वारा निश्चित करना चाहिए। लड़कियों की आयु 12 से 14 वर्ष और लड़कों की आयु 18 से 20 वर्ष होनी चाहिए।''[2]

पत्रकारिता के बढ़ते कदम अंग्रजों के लिए घातक सिद्ध हो रहे थे। अत: वायसराय लार्ड लिटन की सरकार ने 14 मार्च 1876 में वर्नाकूलर प्रेस एक्ट पास करके भारतीय पत्रकारिता का गला घोंट दिया। भट्टजी ने इसका खुले रूप से विरोध करते हुए लिखा-''यदि भारतीय पत्रकार इसलिए अयोग्य हैं कि वे विश्वविद्यालय के स्नातक नहीं अथवा वे कोट, पतलून नहीं पहनते अथवा वे अपनी सभ्यता संस्कृति से चिपके हुए हैं, तब तो अंग्रेज अपनी जगह सही हैं। यदि शिक्षा का अर्थ सच्चाई, शक्ति, योग्यता, सही और गलत में अंतर करना, ईमानदारी तथा देश भक्ति है तो भारतीय पत्रकार उतने ही शिक्षित हैं, जितने अंग्रेज पत्रकार।''[3]

महामना पं0 मदन मोहन मालवीय

महामना पं0 मदन मोहन मालवीय देश-सेवा के लिए शिक्षण और सम्पादन का मार्ग चुना था। उन्होंने सन् 1885 से 1887 तथा 'इंडियन ओपिनियन' नामक पत्र का सम्पादन किया।[4] वे 'हिन्दोस्थान' के भी संपादक हुए जिसका

योगदान नवजागरण में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण रहा। जिसके उदाहरण निम्न हैं :

बालविवाह प्रथा का हिन्दोस्थान ने खुले रूप से विरोध करते हुए विवाह आयु के संबंध में लिखा-'' कन्या की आयु 8 वर्ष के अतिरिक्त 12 वर्ष और लड़के की आयु कन्या से 5 वर्ष अतिरिक्त अर्थात् 17 वर्ष होनी चाहिए।''[5] लेजिस्लेटिव कांसिल में भारतीय प्रतिनिधित्व की मांग के संदर्भ में हिन्दोस्थान ने लिखा-'' सम्पूर्ण भारत प्रतिनिधित्व की मांग करता है तथा आशा करता है कि ब्रिटिश सरकार अवश्य ही इस मांग को मानकर भारतीयों को आभारी करेगी।''[6]

बालमुकुन्द गुप्त

हिन्दी पत्रकारिता की प्रारंभिक अवस्था को सुदृढ़ करने में बाबू बालमुकुन्द गुप्त का विशिष्ट स्थान है। गुप्तजी ने अनेक पत्रों का सम्पादन किया। 1886 ई0 में 'अखबारे चुनार' नामक उर्दू अखबार का संपादन किया। तत्पश्चात् लाहौर के 'कोहनूर' नामक अखबार का सम्पादन सन् 1888 से 1889 तक किया।[7] पं0 मदनमोहन मालवीय जी के अनुरोध पर गुप्तजी सन् 1889 में हिन्दोस्थान' के सम्पादकीय विभाग में आए।[8] कलकत्ता में लगभग 6 वर्ष तक 'हिन्दी बंगवासी','हिन्दी बंगवासी' के सह सम्पादक रहे। गुप्तजी भारतीय राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक और भारतीय संस्कृति के दृढ़ पोषक थे। जिस समय गुप्तजी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया उस समय अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। समस्त भारत में राष्ट्रीय भावनाएँ उमड़ रही थी। अत: गुप्तजी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय जागृति को बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

पं0 प्रताप नारायण मिश्र

पं0 प्रताप नारायण मिश्र ने 15 मार्च 1883 ई0 को 'ब्राह्मण' पत्र का शुभारंभ किया।[9] मिश्र जी बड़े हँसमुख और मस्तमौला थे। साथ ही उनकी प्रवृत्ति निर्भीक और दृढ़ निश्चयी इंसान की थी। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। वे भारतेन्दु के द्वारा प्रतिपादित वाक्य हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान को अक्षरश: पालन करने वाले थे। वे हिन्दुत्व के प्रहरी तथा हिन्दी के अनन्य भक्त थे। हिन्दी, पत्रकारिता और देश भक्ति से ओत-प्रोत होकर उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। 'ब्राह्मण' पत्र के अलावे वे 1889 से 1890 तक हिन्दुस्तान के भी संपादक मंडल में रहे।[10] 'ब्राह्मण' पत्र से उनका बड़ा ही आत्मीय लगाव था। अनेक कठिनाइयों के साथ 1894 तक ब्राह्मण' का प्रकाशन वे करते रहे। उनके जीवन की बहुमूल्य उपलब्धि 'ब्राह्मण' हिन्दी पत्रकारिता इतिहास की एक अमूल्य निधि है।

1900 ई0 के प्रारंभ्भ के साथ हिन्दी पत्रिकारिता में उग्र राष्ट्रवाद की झलक दिखने लगती है। इस सदी के प्रारंभ होते ही अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाएँ घटीं। जिनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव समकालीन पत्रकारिता में देखने को मिलता है। इस युग की प्रमुख घटना है- 1905 ई0 में बंगाल विभाजन, लार्ड कर्जन की विघटनकारी नीतियां, 1906 ई0 में कलकत्ता में हुए काँग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम 'स्वराज्य' की मांग, 1907 ई0 में काँग्रेस में उग्रवाद (बाल, लाल, पाल) का उदय, 11 अगस्त 1908 ई0 को खुदीराम बोस को 15 वर्ष की अवस्था में फाँसी की सजा, महात्मा गाँधी का स्वतंत्रता संग्राम में अभ्युदय, 1917 ई0 में चम्पारण (बिहार) में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग, 1919 का रौलट ऐक्ट जैसी दमनकारी नीति का लागू होना, 13 अप्रैल 1919 का जालियाँवाला बाग हत्याकांड, 19 अक्टूबर 1919 ई0 को समूचे देश में खिलाफत दिवस मनाया जाना आदि राष्ट्रीय घटना हुई। अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में 1905 ई0 में छोटे राष्ट्र जापान से रूसियों की पराजय, 1914 ई0 का प्रथम विश्वयुद्ध प्रमुख है। इन घटनाओं ने भारतीय जनता को और भी आंदोलित किया। उन्होंने अपने को और भी सचेत तथा एकजुट किया। भारतीय नव बौद्धिक वर्ग ने आंदोलन अपने हाथ में लिया। इसके लिए अनेक संस्थाएँ बनी, सभाएँ हुई। प्रमुखत: हम देखते हैं कि पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन बड़ी संख्या में होने लगा। जिनका उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति और समाज-सुधार रहा।

1900 ई0 और उसके बाद प्रमुख समाचार पत्रों में प्रमुख पत्र थे-

1. अभ्युदय 1907 ई0, 2. हिन्दी केसरी 1907 ई0, 3. नृसिंह 1907 ई0, 4. कर्मयोगी 1909 ई0, 5. मर्यादा 1909 ई0, 6. प्रभा 1913 ई0, 7. पाटलिपुत्र 1913 ई0, 8. प्रताप 1913 ई0, 9. कर्मवीर 1920 ई0, 10. स्वतंत्र 1920 ई0, 11. दैनिक आज 1920 ई0, 12.मतवाला 1923 ई0, 13. माहारथी 1925 ई0, 14. हिन्दू पंच 1926 ई0, 15. हंस 1930 ई0, 16. रणभेरी 1930 ई0, 17. हिन्दूस्तान 1936 ई0

अभ्युदय- सन् 1917 ई0 **मे** पं0 मदनमोहन मालवीय ने प्रयाग से साप्ताहिक 'अभ्युदय' प्रारंभ किया। इसके संपादक पं0 मदनमोहन मालवीय, राजर्षि पुरुषोत्तम दास

टंडन, सत्यानंद जोशी, कृष्णकांत मालवीय आदि रहे। इसमें नेता जी सुभाषचंद्र बोस के भाषण को क्रमबद्ध छापा जाता था। आजाद हिन्द फौज के अन्य वीर नायकों के भाषण भी छपते थे, स्वतंत्रता प्राप्ति इसका मुख्य उद्देश्य रहा। इस पत्र में अंग्रेजों की चालों का हमेशा आलोचना की गई। कांग्रेस की नीतियों पर भी प्रश्नचिह्न उठाए गए। सभी अंकों मे राष्ट्रप्रेम की कविताएँ लगातार छापी जाती थी। मुख पृष्ठ पर संपादक द्वारा जोशीले नारे लिखे जाते थे। यथा-''जियो तो सिंह बनकर नहीं तो मृत्यु की गोद में सो जाओ।''

हिन्दी केसरी- सन् 1907 ई0 में नागपुर से 'हिन्दी केसरी' निकला। इसके संपादक श्री माधव राव सप्रे थे और प्रकाशक डॉ0 बालकृष्ण शिवराय मुंजे थे। इसका उद्देश्य लोकमान्य तिलक के 'केसरी' के लेखों को हिन्दी में प्रस्तुत करना था। सन् 1908 ई0 में लोकमान्य तिलक को जिस लेख के कारण राजद्रोह के लिए छः वर्षो की सजा हुई थी वह लेख'' ये उपाय नहीं है'' हिन्दी केसरी में भी छपा था, जिसके कारण इसके संपादक श्री माधव राव सप्रे पर भी राजद्रोह का मुकदमा चला।

नृसिंह-हिन्दी में राजनीतिक पत्र निकालने का प्रयास पं0 अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने किया था। 'नृसिंह' का प्रकाशन नवंबर 1907 में हुआ था। नृसिह' के चौथे अंक मे 'स्वराज की आवश्यकता पर पर विचार करते हुए वाजपेयी जी ने लिखा था कि'' स्वराज की आवश्यकता भारतवासियों को इसलिए है कि विदेशी सरकार उनके अभाव- अभियोगों को समझने में असमर्थ है। यदि आज यहाँ स्वराज्य होता तो लाखों हिन्दुस्तानी दुर्भिक्ष के कारण दाने-दाने का तरस कर प्राण गंवाते। स्वराज्य के अभाव से ही प्रतिवर्ष 45 करोड़ रुपये इस दरिद्र देश मे इंगलैण्ड चले जाते है।''

कर्मयोगी- 1909 ई0 में प्रयाग से श्री सुंदरलाल ने 'कर्मयोगी' का प्रकाशन प्रारंभ किया। यह श्री अरविंद घोष के 'कर्मयोगिन' से प्रेरित था। श्री अरविंद घोष के 'कर्मयोगिन' और श्रीतिलक के केसरी के महत्वपूर्ण अवतरणों के अनुवाद प्रकाशित करने के साथ-साथ इसमें राष्ट्रवाद, स्वदेशी और बायकाट आंदोलनों, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वराज के सिद्धांतों पर महत्वपूर्ण स्वतंत्र लेख प्रकाशित होते थे। इसमें भारत की प्राचीन महत्ता और वर्तमान दयनीय स्थिति पर भी लेख के साथ-साथ यह सुझाव भी होते थे कि किस प्रकार राष्ट्रीय पुनर्जागरण, स्वाधीनता और स्वराज प्राप्त हो सके। परन्तु जब 1910 ई0 को प्रेस कानून पारित हुआ और इससे तीन हजार की जमानत मांगी गयी तो यह पत्र बंद हो गया।

मर्यादा - इसका प्रकाशन महामना मालवीयजी की प्रेरणा से प्रयाग से 1909 ई0 में हुआ। इसके संपादक पं0 कृष्णकांत मालवीय थे।[11] 'मर्यादा' अंग्रेज सरकार पर तेज नजर रखती थी। यह अपनी विचारों को बहुत सावधानी और संयम के साथ निर्भीकतापूर्वक प्रकट करती थी। दुनिया के अन्य देशों के स्वतंत्रता-संघर्ष और आंदोलनों के विषय में भी लेख इसमें छपते थे। सन् 1926 ई0 में 17 वर्षो की सेवा के पश्चात् यह पत्र बंद हो गया।

प्रभा- माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में 7 अप्रैल 1913 ई0 को खंडवा से 'प्रभा' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत जागरूकता फेलाने वाली थी। इसने स्वतंत्रता आंदोलन का जोरदार समर्थन किया। सत्याग्रह आंदोलन के स्थगित होने पर इसका विरोध पत्र द्वारा किया गया। स्वाधीनता के हिमायती 'प्रभा' में राष्ट्रीय चेतना के अनेक लेख छपते थे। कई महत्वपूर्ण विशेषांक 'प्रभा' द्वारा निकाले गए। जिनमें प्रमुख थे- राष्ट्रीय अंक, झंडा लोकमान्य तिलक की स्मृति, पंजाब हत्याकांड, रायबरेली हत्याकांड, अकाली सत्याग्रह, बेलगांव कांग्रेसी अंक।

प्रताप- 1913 ई0 को साप्ताहिक 'प्रताप' का प्रकाशन कानपुर से हुआ। गणेश शंकर विद्यार्थी इसके संपादक थे। गणेश जी क्रांतिकारी विचारधारा वाले पत्रकार थे। 'सरस्वती' और 'कर्मयोगी' में गणेश जी कार्य कर चुके थे। गणेश जी के संरक्षण में 'प्रताप' एक प्रमुख राष्ट्रीय और राजनीतिक विचारधारा का पत्र बना। इस पत्र के माध्यम से अंग्रेजों की नीतियों का कड़ा विरोध किया गया। फीजी के प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा का चित्रण 'कुली प्रथा' नाटक के माध्यम से किया गया। 'अफ्रीकी प्रवासी भारतवासी' में गाँधीजी क अफ्रीका प्रवास की घटनाओं का विशद वर्णन है। गाँधीजी के चंपारण आंदोलन की खबरों को निर्भीकता से छापा गया। इसके अलावे 'प्रताप' ने सदैव राष्ट्रीय विचारधारा की अभिव्यक्ति की। स्वतंत्रता के प्रबल हिमायती 'प्रताप' ने अपना मस्तक अंग्रेजों के सामने कभी नहीं झुकाया।

कर्मवीर - पत्रकारिता के युगनिर्माता श्री माधवराव सप्रे, श्री विष्णुदत्त शुक्ल और ठाकुर छेदीलाल सिंह के सहयोग से 'राष्ट्रसेवा लिमिटेड' नामक एक कंपनी की

स्थापना की और 17 जनवरी, 1920 को जबलपुर से साप्ताहिक कर्मवीर प्रकाशन कर दिया।[12] श्री माखनलाल चतुर्वेदी सम्पादक हुए। श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' के माध्यम से व्यापक राष्ट्रीय संवेदना और शाश्वत मूल्यों को विद्रोह के स्तर पर समन्वित करने की शुरूआत की। इस प्रकार से 'कर्मवीर' मधयप्रदेश की पत्रकारिता की एक विराट उपलब्धि है। जब तक वे जीवित रहे, 'कर्मवीर' राष्टीय भावना की धुरी पर घूमता रहा। उनकी पत्रकारिता ने आत्मशौर्य की अपराजेय भाव को जन-मन में भरा और प्रांत में लेखकों, कवियों और पत्रकारों की नई पीढ़ी तैयार की जिन्होंने भी निरंतर इसी के लिए स्वयं को न्योछावर कर दिया। 12 मई 1921 ई0 को श्री माखनलाल चतुर्वेदी राजद्रोह के आरोप में बन्दी बनाए गए और उन्हें चार माह की कारावास की सजा हुई। वहीं पर 'एक फूल की अभिलाषा' जैसी कालजयी कविता की रचना हुई। जिसने स्वाधीनता की आग युवकों में फूँक दी थी-

मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक।।

स्वतंत्र- 'स्वतंत्र' गाँधी युग का एक तेजस्वी दैनिक पत्र था जिसे कलकत्ते से पं0 अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने 4 अगस्त 1920 को प्रकाशित किया था।[13] इस पत्र में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाये गए असहयोग आंदोलन के समर्थन में समाचार छापे गये। सरदार भगत सिंह, राजगुरु और शुकदेव को फाँसी चढ़ा देने की खबर संपादकीय में 'हिन्सा और हिन्सा' शीर्षक से छपा- ''सरदार भगत सिंह आदि फाँसी के तख्ते पर लटका दिये गये, प्रकाशमय दीपक सदा के लिए बुझ गया। निकट संबंधियों को भी भेंट करने का हुक्म नहीं मिला। 'गोली से उड़ा दो पर फाँसी के तख्ते पर मत चढ़ाओ, सरदार की अंतिम इच्छा भी सरकार ने मंजूर नहीं की।''

''दीप निर्माण हो गया। कलकत्ता 23 मार्च 1920। नयी दिल्ली से एसोसियेशन प्रेस को रात के साढ़े ग्याहर बजे टेलीफोन द्वारा मालूम हुआ है कि लाहौर के सेण्ट्रल जेल में सन्ध्या के सात बजे सरदार भगतसिंह, श्रीयुत राजगुरु तथा श्रीयुत शुकदेव फाँसी के तख्ते पर लटका दिये गये।''

दैनिक आज- दैनिक आज का प्रकाशन 1920 ई0 में काशी से हुआ। इसके संपादक थे बाबू शिवप्रसाद गुप्त और प्रथम संपादक श्री प्रकाशजी थे। इनके पश्चात् बाबूराव बिष्णु पराड़कर 'दैनिक आज' के संपादक नियुक्त हुए। पराड़कर जी 1920 ई0 तक 'आज' के प्रधान संपादक रहे। इनके संपादकत्व में' आज' द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन में दिया गया योगदान अभूतपूर्व और चिरस्मरणीय है। निर्भीक राष्ट्रीय नीति तथा अंग्रेजी सरकार की कटु आलोचनाओं के कारण पराड़कर जी पर राजद्रोह का मुकदमा चला। जमानतें मांगी गयीं कई प्रकार से प्रताड़ित किया गया। फिर भी इस पत्र ने निर्भीकता पूर्वक स्वाधीनता आन्दोलन का मार्ग-दर्शन किया॥

मतवाला- मतवाला हिन्दी का हास्य-व्यंग्य-विनोद प्रधान साप्ताहिक पत्र था। परन्तु यह राष्ट्रीयता का पोषक भी था। इसे साहित्यिक पत्र होने का भी गौरव प्राप्त था। 23 अगस्त 1923 ई0 को मतवाला का पहला अंक निकाला गया था। इस पत्र को निकालने के पीछे चार व्यक्तियों का सोच और उत्साह था। वे थे मुंशी नवजादिक लाल, पं0 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, बाबू शिवपूजन सहाय और 'बालकृष्ण प्रेस' के मालिक महादेव प्रसाद सेठ। किस प्रकार समाज और राजनीति पर मतवाला नजर रखता था का पता इन पंक्तियों से चलता है।'राजनीति परिस्थिति में उथल-पुथल मचा हुआ है। वह निराशा और दुविधा की बीहड़ घाटियों में भटक रही है। दलबंदियाँ सिर उठा रही हैं। असहयोग शक्ति की कमर टूट गई हैं। आत्मविश्वास कलेजा थामकर बैठ गया। दाढ़ी वालों के पेट में दुगुना लम्बी दाढ़ी है और चोटी वालों के पीछे चोटी से भी लम्बी दुम।'[14]

महारथी - 'महारथी' का प्रकाशन सितंबर 1925 ई0 को विजयादशमी के दिन हुआ था। इस मासिक पत्र का प्रकाशन दिल्ली से होता था। इसके संचालक और संपादक श्री रामचंद्र शर्मा थे। इनके सहायक में श्री जैनेन्द्र कुमार, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ऋषभचरण जैन, मंगतदेव किशोरीलाल थे। इसका मुख्य उद्देश्य देश में राष्ट्रीयता की भावना को जगाना और हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना था। 'महारथी' ने शक्ति अंक, राजपूत अंक, प्रताप अंक, मराठा अंक आदि विशेषांक निकाले। इसके लेखों,कहानियों, कविताओं और समाचारों की शैली सदैव अंग्रेजी सरकार को खटकती रही। जिसके कारण प्रेम अध्यादेश के अन्तर्गत कई बार जमानत मांगी गई और पत्र बीच में बन्द हुई। मासिक से दैनिक संस्करण निकाले गए। दिसंबर 1928 ई0 में लाला लाजपतराय की मृत्यु पर इसने लिखा था-

'' चढ़ रहा है हर जुबां पर अब जुनून लाजपत
क्या कोई तुफान लाएगा ये खूने लाजपत।
हो रहे हैं जर्द चेहरे आज क्यों हुक्काम के,
सुर्ख होने चाहिए थे पीके खूने लाजपत।''

हिन्दू पंच- 'हिन्दू पंच' का प्रकाशन 1926 ई0 में कलकत्ता से बाबू रामलाल वर्मा ने प्रकाशन किया था। संचालक थे बाबू मुकुन्दलाल वर्मा। यह सचित्र साप्ताहिक पत्र था।[15] हिन्दू पंच के संपादकीय में प्रखर जातीय स्वर उभरता था।' बलिदान अंक' इस पत्र का बड़ा ही महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक अंक रहा है। जो 1 जनवरी 1930 को प्रकाशित हुआ था। इसके संपादकीय टिप्पणी इस प्रकार थी-'' क्या माता की परतंत्रता से हमें लज्जा नहीं आती। हमारी यह समृद्ध-शालिनी रत्नगर्भा माता जो किसी समय धन-धान्य से परिपूर्ण थी, आज दरिद्र भिखारिणी हो रही है। परतंत्रता और दासता में रहते-रहते क्या अब हम ऐसे निष्प्राण हो गये हैं कि वह दासवृत्ति त्याग देने का हम प्रयास भी नहीं कर सकते। हमारे रोने, मांगने या गिड़गिड़ाने से हमें कोई स्वतंत्रता न प्रदान कर देगा। स्वतंत्रता ऐसी है ही नहीं, जो आसानी से मिल जाये और आसानी से मिली स्वतंत्रता कभी टिकाउ नहीं हो सकती।''

हंस- मार्च 1930 ई0 को कहानी प्रधान मासिक पत्र हंस का प्रकाशन हुआ। इसके संचालक और सम्पादक मुंशी प्रेमचंद थे। उन्होंनं बड़े उत्साह के साथ पत्र काशी से प्रकाशित किया था। वह मूलत: साहित्यिक पत्र था, किन्तु उसके जातीय स्वर में कोई कमी नहीं थी। 'हंस' के प्रथम अंक के संपादकीय में लिखा गया-'भारत में एक नये युग का आगमन हो रहा है, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिए तड़पने लगा है। इस तिथि की यादगार एक दिन देश में कोई विशाल रूप धारण करेगी। बहुत छोटी-छोटी तुच्छ विजयों पर बड़ी-बड़ी शानदान यादगारें बन चुकी हैं। इस महान विजय की यादगार हम क्या और कैसे बनायेंगे, यह तो भविष्य की बात है।''[16]

हिन्दुस्तान- दिल्ली से राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' का प्रकाशन 1936 ई0 में हुआ। इसके संपादक सत्यदेव विद्यालंकार थे। इन्होंने 1936 से 46 ई0 तक पत्र का संपादन किया। इस काल में इसने राष्ट्रीय चेतना जगाने और स्वतंत्रता आन्दोलन को तेज करने में योगदान किया। तब 1946 ई0 से 1963 ई0 तक श्री मुकुट बिहरी वर्मा इसके संपादक हुए। इनके कार्यकाल में दैनिक 'हिन्दुस्तान' का विस्तार हुआ। और पत्र राष्ट्र का अग्रणी पत्रों में एक बन गया। 1942 के आन्दोलन के समय यह पत्र छ: महीने बन्द रहा। यह सेंसरशिप के विरोध में था। एक अग्रलेख पर छ: हजार रुपये जमानत मांगी गई थी। स्वतंत्रता के बाद हिन्दुस्तान भारत का प्रमुख समाचार पत्र बना जो राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, खेल, विज्ञान, शिक्षा, आदि के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रीय खबर प्रमुखता से छापता है।

निष्कर्ष:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी पत्रों का योगदान कुछ इस प्रकार रहा की इसने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण भारतवासियो को एकजुट करने का काम किया। जिसके कारण अंग्रेजो के खिलाफ निर्णायक आन्दोलन हो सका। यह संघर्ष लगभग दो सौ वर्षो के पराधीनता के बीच उपजी राष्ट्रीय चेतना, एकजुटता, प्राचीन गौरव, आधुनिक विचाराधारा, और अदम्य साहस का परिणाम था। इन सबों को विकसित और पुष्ट करने मे भारतीय पत्रकारिता का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। भारत की हिन्दी पत्रकारिता के द्वारा हिन्दी और अहिन्दी भूभाग में राष्ट्रीयता का विकास हुआ। भारत के सभी आन्दोलनों से साधारण जनता का जुड़ाव पत्रकारिता के माध्यम से ही हुआ। चाहे वह आन्दोलन उग्रविचार वाले क्रांतिकारियो का हो या फिर अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी का रहा हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. भातेन्दु युग: डॉ0 रामविलास शर्मा, पृ0-41
2. हिन्दी प्रदीप, जून 1890 अंक
3. हिन्दी प्रदीप, अप्रैल 1878 अंक
4. हिन्दी समाचार पत्रें का इतिहास पृष्ट-24
5. हिन्दोस्थान, 30 नवंबर 1889 ई0
6. हिन्दोस्थान, 30 नवंबर 1887 ई0
7. वही
8. वही
9. वही
10. वही
11. पत्रकारिता के विविध रूप- रामचंद्र तिवारी पृष्ट-42
12. हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ट-155
13. हिन्दी पत्रकारिता, कृष्णबिहारी मिश्र,पृष्ट-400
14. हिन्दी पत्रकारिता, कृष्णबिहारी मिश्र,पृष्ट-353
15. हिन्दी पत्रकारिता, कृष्णबिहारी मिश्र,पृष्ट-373
16. हिन्दी पत्रकारिता भारतेन्दु युग से छायावादोत्तर काल तक, डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह, पृष्ट-96